तृतीय अध्याय :

(उ) " नाटक की कथावस्तु : आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें "

साहित्कार प्राय: अपनी रचनामें अपने युग की समस्याओं का चित्रण जरूर करता है। जो नाटक अपने समय की समस्यापर प्रकाश डालता है , वह सफल होता है।

आधुनिक नाटक के बारे मे डॉ. ओंकारनाथ श्रीवास्तव का कहना है -- " आज युगगति बहुत तीव्र है। इस बदलते युग में जहाँ हमारे रीतिरिवाज, मान्यताएँ , मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं , वहाँ नाटक की रचना प्रक्रियामे परिवर्तन हो रहा है। आज का नाटक समकालीन सामाजिक बोधसे विमुख नहीं , वह अपने उत्तरदायित्व का सफल निर्वाह कर रहा है। " [१]

उपर्युक्त विचारों के अनुरूप डॉ. दिनेश का " पृथ्वीराज " नाटक भी आज के भारतीय समाज का, विशेषकर राजनैतिक परिस्थिति का और नैतिक मूल्यों की गिरावट का चित्रण करने में सफल है।

साहित्यकार किसी न किसी युग की समस्या का चित्रण अपनी कृति में करता है। अपनी कृति को सर्वकालीन शाश्वत बनाने के लिए उसमे सामाजिक समस्या का चित्रण आवश्यक है। ऐतिहासिक साहित्य के बारे में तो यही कहा जा सकता है, कि वह तभी सफल है , जब उसमे युगीन समस्या का चित्रण हो।

" पृथ्वीराज " नाटक की कथा भले ही १५ वी शती की ऐतिहासिक घटना हो, लेकिन नाटक का उद्देश्य केवल इतिहास को दोहराना न होकर

---

१) हिन्दी साहित्य : परिवर्तन के सौ वर्ष - पृ. २८

आधुनिक भारत की राजनैतिक समस्या तथा नयी पीढी की नैतिकता को स्पष्ठ करना है।

इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है , जिसे लेखक ने शुध्द ऐतिहासिक नाटक कहा है। महाराणा रायमल के जीवन की राजनैतिक समस्याएँ , इस नाटक की कथा का आधार है , जिसे पृथ्वीराज के द्वारा सुलझाया गया है। चारों ओर संकटसेघिरा हुआ मेवाड , युध्द विरोधी नीति अपनानेवाले शासक- महाराणा रायमल , दस्यु प्रवृत्ति के मीन लोग , विलासी जागीरदार और मण्डलाधीश , असंतुष्ठ सूरजमल और सारंगदेव, परम्परावादी तथा नियतिपर विश्वास रखनेवाला संग्रामसिंह , साहस की अपेक्षा अनैतिकता को अपनानेवाला जयमल, वीरता , साहस तथा देशप्रेम की भावनासे मातृभूमि के संकट को दूर करनेवाला पृथ्वीराज - ये सब आधुनिक राजनैतिक स्थिति के अनुरूप ही है।

" पृथ्वीराज " नाटक १९६३ ई. मे लिखा है। जिसके कुछ ही दिन पहले भारत - पाक और भारत - चीन युध्द हो गया था। युध्द की विभीषिका को समाज ने देखा था। दूसरे महायुध्द के बाद मनुष्य के मन में युध्द विरोधी भावना का निर्माण हो रहा था।

उस समय की परिस्थिति का वर्णन डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत इन शब्दों मे करते हैं - " स्थिर समाज, स्वार्थी राजनीति , संहारक विज्ञान , युध्द की विभीषिका और अति संगठन के चक्रव्युह में मानव की अपनी अस्मिता कहीं खो गई है , जिसकी उसे तलाश है । "[१]

पृथ्वीराज नाटक इसे दिशा निर्देश कर सकता है। राज्यशासन सुचारू ढंगसे चलाने के लिए जनता के सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। " भीतरी - बाहरी शत्रुओं को समाप्त करने के लिए हमें प्रजा की शक्तिको दृढ बनाना चाहिए। उसी की शक्ति पर शासन की शान्ति और सुरक्षा निर्भर है।

---

१) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. १२६.

यदि प्रजा भोजन - वस्त्र के लिए भटकेगी , तो शासन की शक्ति से हम आक्रमणकारियो और अशान्ति फैलानेवालों का मार्ग नहीं रोक सकते। "[१] यह महाराणा रायमल के विचार राजनैतिक समस्यापर सार्वकालिक उपाय है।

नाटककार ने दस्यु प्रवृत्ति का विरोध करने की घटना जो बताई है , वह ऐतिहासिक होते हुए आधुनिक भी लगती है। गोद्वार के मीन लोग संगठित होकर लूटमार करते तथा शक्ति बढनेपर मेवाड से अपने आपको स्वतंत्र घोषित करते है। आज देश में जातीय संगठन बनाने का जो प्रयास हो रहा है तथा कुछ शक्तिया आतंक फैला रही है वह मीन दस्यु प्रवृत्ति के समान ही है। आज का आतंकवाद ही इतिहास की दस्यु वृत्ति है। अत: नाटककार ने इसका सुन्दर ढंगसे चित्रण करके उसके समाधान का प्रयत्न किया है। जनता और शासन की एकता से ही यह समस्या हल की जा सकती है।

" आज की युवा पीढी असंतोषी , विद्रोही और आक्रोशपूर्ण है। उसमें अनास्था , मूल्यहीनता , अलगाव , परम्पराभंजन और संस्कारों की निर्जीवता पायी जाती है। "[२] जिसे संस्कार दिलाने का उद्देश्य नाटककार का है। उनका कहना है - " यह ऐतिहासिक नाटक संस्कार परिष्कार की पर्याप्त सामग्री प्रदान करेगा तथा नई पीढी के युवा वर्ग के लिए यह एक शिक्षाप्रद नाटक प्रमाणित होगा। "[३]

आज की युवा पीढी को सही दिशा निर्देश की आवश्यकता है। आज का युवक व्यक्तित्व की अप्रतिष्ठा और अस्तित्वहीनता की स्थिति मे नैतिक मूल्यों से दूर जा रहा है। सूरजमल का चरित्र इसी प्रकार का है। तारा के रूप सौन्दर्य को देखते ही वह उसके प्रति आकर्षित होता है और उसकी प्राप्ति की प्रतिज्ञा करता है। जयमल संग्रामसिंह का पीछा करते बदनौर मे आता है।

---

१) पृथ्वीराज , पृ. १४
२) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक , पृ. ११६.
३) पृथ्वीराज भूमिका , पृ. ८.

तारा को देखकर उसपर मुग्ध होता है। यह दोनों युवक नैतिक मूल्यों को न माननेवाले नई पीढी का परिचय देते हैं।

तारा सूरजमल की कुदृष्टि को देखकर उससे घृणा करती है। तो राव सुरताण जयमल की अनैतिकता को देखते ही उसकी हत्या करते हैं। " आज कोई भी व्यक्ति किसी मान्यता विशेष के प्रति समर्पित नहीं। सर्वत्र एक अनैतिकता अथवा अराजकता की स्थिति पनप रही है। "[१] इसका विरोध करके नाटककारने नैतिकता निर्माण करने का प्रयत्न किया है। नारियों की सतीत्व की रक्षा को जीवन का श्रेय माना है। [२]

बदलती हुई परिस्थिति के साथ आज जीवन विषयक मूल्य भी बदल रहे हैं, जिसे देखकर नये साहित्यकारों का दायित्व भी बदल गया है। " आज देश का प्रबुध्द वर्ग देश के लिए चिंतन कर रहा है। एक ओर उसे अपनी स्वतंत्रता को कायम रखना है, तो दूसरी ओर विघटनशील प्रवृत्तियों को रोककर देश को समृध्द एवं खुशहाल बनाना है। " [३] इस विचार के अनुरूप " पृथ्वीराज " नाटकमें नाटककार ने मेवाड के इतिहास का ऐसा ही उदाहरण हमारे सामने रखा है, जो आधुनिक युग के लिए आवश्यक है।

" पृथ्वीराज " नाटकमे युध्द के कारण और परिणाम पर भी विचार किया गया है। शासक का प्रजा का सेवक होना आवश्यक है, लेकिन उसके राज सिंहासन को विलास का साधन मानने के कारण युध्द और हत्याओं का निर्माण होता है। यह उदयसिंह के चरित्र का संकेत आधुनिक युध्द प्रिय व्यक्ति का प्रतीक लगता है। " महाराणा रायमल तो युध्द के परिणामों की कल्पना से ही डरते है। " [४]

---

१) बदलते मुल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. १२६
२) पृथ्वीराज, पृ. ४४
३) आधुनिकता और राष्ट्रीयता - राजमल वोरा पृ. ६
४) पृथ्वीराज, पृ. ११.

डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत युध्द जन्य प्रभाव के संदर्भ मे लिखते है - "राष्ट्रों के निजी स्वार्थों, सीमा-विवादों, राज्य विस्तार की कामनाओ से युध्दो की स्थिति उपजती है। युध्दो का परिणाम विनाशकारी होता है। --- युध्दों मे सामाजिक अराजकता और मर्यादाहीनता की भीषण परिणति होती है। मानव अपने में भयंकर खोखलापन और नैतिक दिवालियापन अनुभव करने लगता है।"[१] महाराणा रायमल के विचार इस संदर्भ मे चिंतनीय है।

साहित्य मे आधुनिकता का यथार्थ चित्रण करना सहज नहीं है।" जो साहित्यकार आधुनिकता की ओर उन्मुख होता है, उसे अपने युग से जुझना पडता है।"[२] डॉ. दिनेश की साहित्यिक यात्रा भी संघर्ष के रास्ते की ही है। वे संघर्षों के राही है। वे निरन्तर मानवीय मूल्यो के लिए विरोधी शक्तियों से जूझते हुए रेगिस्तान को बगीचों मे बदलने का प्रयास साहित्य के द्वारा किया है।

युध्द प्रियता को मानवता का शत्रु घोषित करते हुए आपने कहा है -

" तुम दुश्मन हो इन्सानों के
अस्त्र शस्त्र की होड लगाते।
शांत और सम्पन्न धरा पर
सर्वनाश की आग जगाते।"[३]

(जलती रहे मशाल)

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विचारों के आधारपर "पृथ्वीराज" नाटक की आधुनिकता के बारे में संक्षेप में कहा जा सकता है, कि नाटककारने भले ही नाटक में स्पष्टता से आधुनिकता का संकेत न दिया हो, तो भी उद्देश्य के संकेत में ही यह नाटक आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें ही लिखा हुआ है, यह स्पष्ट हो जाता है।

---

१) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. १०७.
२) आधुनिकता और राष्ट्रीयता, पृ.८
३) समकालीन सदर्भों की काव्य संचेतना पृ. ११९-१२०.

" नई पीढी का लेखक अतीत को अतीत के संदर्भ में देखते हुए , उसकी वर्तमान उपयोगिता पर भी विचार करता है। "[१] इस विचार के अनुरूप डॉ. दिनेश जी मेवाड के इतिहास की घटना को आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें देखने का सफल प्रयास " पृथ्वीराज"नाटक में किया है। अत:"पृथ्वीराज " नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी आज की पीढी को राष्ट्रप्रेम तथा नैतिकता की शिक्षा देने में सफल है।

---

१) आधुनिकता और राष्ट्रीयता , पृ. ५.